International Journal of Applied Research 2018; 4(12): 425-430

**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 5.2
IJAR 2018; 4(12): 425-430
www.allresearchjournal.com
Received: 29-10-2018
Accepted: 30-11-2018

**डॉ० गीता पाण्डेय**
सहायक प्रोफेसर,मैत्रेयी कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
भारत

**Correspondence**
**डॉ० गीता पाण्डेय**
सहायक प्रोफेसर,मैत्रेयी कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
भारत

# स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में अभिव्यक्त गांधीवादी मूल्य

**डॉ० गीता पाण्डेय**

**प्रस्तावना**

लगभग दो शताब्दी तक अँग्रेजी हुकूमत की पराधीनता के बाद 15 अगस्त सन् 1947 को भारत राजनीतिक रूप से आजाद मुल्क बना। भारत की राजनीतिक ही नहीं बल्कि सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों में परिवर्तन का प्रस्थान-बिन्दु भी यहीं से माना जाता है। आजादी के बाद विभाजन की त्रासदी और आजादी को लेकर व्यक्ति और समाज को जिस मोह भंग की पीड़ा से गुजरना पड़ा उसका प्रभाव जीवन के सभी क्षेत्रों पर देखने को मिला। स्वतन्त्रता पश्चात् की बदली स्थितियों ने साहित्य एवं साहित्यकारों के चिंतन-मनन की परिपाटी में भी परिवर्तन कर दिया। यहीं से व्यक्ति और समाज के विचार एवं शैली में भी एक नई परिवर्तन की शुरूआत होती है। यद्यपि साहित्यकार समाज का सबसे संवेदनशील व्यक्ति माना जाता है, वह अपने युग और परिवेश से सम्बद्ध रहकर युगानुरूप रचनाओं की सृष्टि करता है। समाज के सत-असत परिवेश से ही वह अनुकरण कर अपनी विचार एवं शैली निर्मित करता है। समाज और व्यक्ति के इन्हीं अन्तःसंबंधों एवं वैचारिकी का चित्रण स्वातंत्र्योत्तर कहानीकारों ने अपनी कहानियों में किया है। स्वातंत्र्योत्तर कहानियां आधुनिक जीवन-बोध को लेकर लिखी गई हैं, जिसमें आधुनिक जीवन से जुड़े नए धरातल जैसे समाज, राजनीति, सत्ता-शासन, अस्तित्व को खोजता आम आदमी, निजी स्वतंत्रता की कामना, धन-लिप्सा औद्योगीकरण, नारी की दयनीय अवस्था, दलित समस्या एवं चेतना आदि मुख्य रहे।

स्वातंत्र्योत्तर युग में कहानी का कथ्य कुंठा, मोहभंग की स्थिति, अकेलापन, विसंगति, विडम्बना, जीवन की यांत्रिकता के साथ-साथ महानगरों की दौड़ती जिंदगी, मूल्य विघटन, व्यक्ति की मानसिकता में हो रहे बदलाव, रहन-सहन में बढ़ती भौतिकता आदि विषयों पर केन्द्रित रहा। इस सामाजिक उतार-चढ़ाव के साथ-साथ कहानीकारों ने राजनीतिक वैमनस्यता को भी अपनी कहानियों में स्थान दिया। इस युग में आकर कहानी विभिन्न प्रवृतियों में बंट गई।

कहानियों में राजनीतिक कहानी, सामाजिक कहानी, मनोवैज्ञानिक कहानी ऐतिहासिक कहानी आदि कहानियों में समाज के विभिन्न कथ्य और विषय को प्रस्तुत करने का कार्य इस काल के कहानीकारों ने किया। तत्कालीन युग में जो विचारधाराएँ चल रही थीं, उन सभी विचारधाराओं का सफल निष्पादन स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में हुआ। इन विचारधाराओं में मार्क्सवाद, अस्तित्ववाद, मनोविश्लेषणवाद आदि प्रमुख रहे हैं, लेकिन इन विचारधाराओं के साथ कुछ ऐसी विचारधाराएं भी थीं, जो मुख्यधारा में तो नहीं थी फिर भी साहित्य में अपना स्थान और महत्व बनाए रखें हुए थीं। ऐसी ही एक विचारधारा साहित्य में दृष्टिगत हुई जिसे 'गांधीवाद' के रूप में स्वीकार किया गया।

वैसे तो गांधीवाद को विचार या मत ना कहकर एक पूर्ण दर्शन माना जाता है। जिसने आज भी अपने महत्व को बरकरार रखा है। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में भी गांधीवादी विचार और उनके मूल्यों के दर्शन होते हैं। गांधी जी जैसा स्वयं भी मानते हैं कि वे अपने विचारों को किसी मत या वाद में नहीं बांधना चाहते, वे तो शाश्वत मूल्य हैं 'जो हमारी संस्कृति में प्राचीन काल से विद्यमान हैं, गांधी के इन्हीं विचारों को हम राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सैद्धांतिक रुप में देख सकते हैं।'१

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में गांधी के राजनीतिक मूल्यों को निरूपित किया गया है। गांधी जी ने भारत की स्वतंत्रता को लेकर जिन आंदोलनों की योजना की, वे सभी आंदोलन स्वतंत्रता के बाद भी समाज सुधार और सरकार को चेताने के लिए काम आए। आज भी 'स्वदेशी अपनाओ' का नारा सटीक सिद्ध होता है, क्योंकि आज भी भारत विदेशी उत्पादनों के भ्रम-जाल में फंसता चला जा रहा है। इसी वैचारिक भावभूमि को हिन्दी कहानियों में भी प्रयुक्त किया गया है। अमृत राय की कहानी 'अंधी लालटेन' कहानी में स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने पर बल दिया गया है। "आजकल बड़ी हलचल है ना दिन देखें ना रात। बड़ा शोर मचता है। आसपास की गलियों से और न जाने कहां-कहां से लोग बटुर आते हैं। औरतें भी, मर्द भी, झण्डा लेकर निकल निकल पड़ते हैं सब, दो-दो सौ, चार चार सौ बड़े जोर से चिल्लाते हैं सब, गला भी नहीं फटता हर तीसरे चौथे दिन। एक दिन तो बड़े जोर की होली जली.....बिलायती कपड़ा सबके घरों से निकाल कर आग लगा दी। रायबहादुर साहब की लड़कियों ने भी अपने कपड़े दे दिए।"२ स्वदेशी प्रेम की ऐसी बानगी अन्य कई कहानियों में दिखाई देती है।

स्वदेशी आंदोलन के साथ-साथ राष्ट्र-प्रेम, देशभक्ति जैसी भावनाएं भी स्वातंत्र्योत्तर कहानियों में लक्षित होती है। इनमें भगवती चरण वर्मा की 'दो पहलू', महेंद्र कुमार मुकुल की 'बलिदान', आनंद प्रकाश जैन की 'कांसे का आदमी', भैरव प्रसाद गुप्त की 'मां', 'स्मारक', 'मास्टर जी' और 'नौकरानी'। आज की कहानियों में भी देश-प्रेम की भावना के दर्शन होते हैं, जिसमें अखिल कुमार मिश्र की कहानी 'पैसा' प्रमुख है। जिसमें देश को खोखला बनाने की बात कही गई है। राष्ट्र-प्रेम के साथ वर्तमान युगीन कहानियों में सांप्रदायिक एकता को भी स्थान दिया गया है। आज भारत के समक्ष सांप्रदायिक-एकता की भावना चुनौती के रुप में विद्यमान है। भारत में विभिन्न धर्मों के लोगों का वास है, इन सभी धर्मों के बीच आपसी सौहार्द बना रहे, इसकी जिम्मेदारी जागररूक साहित्यकार की भी है। आज के कहानीकार ने अपनी कहानियों में हिंदू-मुस्लिम एकता को बल दिया है। बदीउज्जमा ने 'अंतिम इच्छा' कहानी में हिंदू मुस्लिम एकता के साथ-साथ राजनीतिक प्रपंच को भी प्रस्तुत किया है।

राजनीतिक विचार पक्ष के अंतर्गत असहयोग आंदोलन, हृदय-परिवर्तन, स्वराज जैसे सिद्धांतों को स्वातंत्र्योत्तर कहानियों में पर्याप्त महत्व दिया गया

है। स्वातंत्र्योत्तर कहानी में सामाजिक पक्ष के अंतर्गत महिला सुधार, नारी जागरण, अस्पृश्यता जैसी समस्याओं को चित्रित किया गया है। स्वातंत्र्योत्तर युगीन कहानियों में महिला और उससे जुड़ी अनेक समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है। जिसमें दहेज प्रथा, विधवा विवाह, वैश्या समस्या आदि प्रमुख हैं। वैश्या समस्या नारी-जीवन की एक बहुत बड़ी विडंबना है, जिसे महेंद्र कुमार मुकुल ने अपनी कहानी 'नारी वेश्या नहीं देवी है' में प्रस्तुत किया गया है। साथ ही समाज के द्वारा की गयी पहल को भी दिखाया गया है। आर्थिक तंगी के कारण वेश्यावृत्ति के पेशे में आई महिला को रोजगार के उचित अवसर देकर समाज में उसे सम्मानजनक स्थिति प्रदान की जाए। ''पंचों हमारा जीवन अभी तक पाप के गर्त में पड़ा हुआ सड़ रहा था। समाज की अन्य स्त्रियों की भांति हमारा कोई मूल्य और आदर्श नहीं था, समाज का चाहे जो पुरुष चांदी के चंद सिक्कों में हमारा शरीर खरीद लेता था। अब सरकार के नए कानून से ऐसा लग रहा है कि जैसे हमारा अपमानित जीवन पाप के घोर अंधकार से निकलकर जीवन के नए प्रकाश में आ गया हो। समाज का कोई भी व्यक्ति हमको मार्ग का पत्थर समझकर ठोकर मार कर आगे नहीं बढ़ सकता, मेरा चेहरा अब तक भ्रम के आवरण से ढ़का हुआ था। आज मेरे मुख से कलंक और पाप का पर्दा हट गया है। पंचों अब मैं मेहनत और मजदूरी करके पेट भरूंगी।''३ इस संवाद से स्पष्ट है कि वेश्या जीवन की विडंबना को मर्मस्पर्शी रुप में प्रस्तुत किया गया है। समाज किस प्रकार स्त्री का शोषण करता है और फिर अंधकारमय जीवन की ओर धकेल देता है, लेकिन स्त्री इस दलदल से बाहर आना चाहती है। जहां भी उसे उम्मीद की छोटी सी किरण दिखाई देती है वह उसके सहारे नए प्रकाश और नई रोशनी के साथ जीवन को जीना चाहती है। इसी प्रकार अमृतलाल नागर की कहानी 'हाजी कुल्फी वाला' में वेश्या- समस्या को किस प्रकार समाप्त किया जाए, इस पर चर्चा की गई है। कमलेश्वर की 'मांस का दरिया' कहानी वेश्या समस्या पर आधारित बहुचर्चित कहानी है, जिसमें वेश्यावृत्ति के जंजाल में फंसी स्त्री की करुणा और व्यथा को बड़े ही मार्मिक रूप में चित्रित किया गया है। भगवती चरण वर्मा की कहानी 'उत्तरदायित्व' भी ऐसी कहानी है जिसमें यह दिखाया गया है कि स्त्री को वेश्यावृत्ति के व्यवसाय में धकेलने का जिम्मेदार पुरुष समाज ही होता है, "मनुष्य के भविष्य से खेलना, मनुष्य के प्राणों से खेलना..... इस पर आपको आश्चर्य होता है, पर मैं आपसे पूछती हूं, कौन इनसे नहीं खेलता ? क्या पुरुष स्त्री के प्राणों से नहीं खेलता? क्या वह स्त्री को गुलाम बनाकर रखना नहीं चाहता? मिस्टर रंजन अपने समाज में आप वेश्याओं का स्थान तो जानते ही होंगे। ये वेश्याएँ हैं कौन? ये वेश्याएँ भी कभी सच्चरित्र युवतियाँ थीं, जो सुख चाहती थीं, और प्रतिष्ठा चाहती थी पर इनमें से प्रत्येक के साथ किसी न किसी पुरुष ने सबसे पहले खेला है और उस पहले खेल से संतुष्ट न होकर पुरुष जाति ने उनके जीवन भर के लिए उनको खिलौना बना लिया है। और भी सुनेंगे आप, यह जो नवयुवकों की भीड़ मेरे दरवाजे पर हाज़िरी बजाती है, इनमें से अधिकांश मुझे खिलौना बनाकर खेलना चाहते हैं।"[४] इस प्रकार स्वातंत्र्योत्तर कई कहानियों में वेश्या समस्या को उठाया गया है। कृष्णा सोबती की 'आजादी शम्मोजान की', निशा गहलोत की 'एक कहानी का जन्म', सोमा वीरा की 'धरती की बेटी' आदि उल्लेखनीय हैं।

गांधी जी के विचारों के सामाजिक पक्ष के अंतर्गत जो विचार आते हैं, उनसे प्रभाव ग्रहण करके हिन्दी कहानीकार अपनी कहानियों में विधवा-विवाह का समर्थन करते दिखाई देते हैं। अनेक कहानीकारों ने इस समस्या को उठाया है, जिनमें महेंद्र कुमार मुकुल की कहानी 'एक कथानक: एक

व्यथा', शिव प्रसाद सिंह की 'कर्मनाशा की हार', सोमा वीरा की कहानी 'धरती की बेटी', गंगा सहाय प्रेमी की 'उचित निर्णय' आदि कहानियां विधवा-विवाह का समर्थन करती हैं। साथ ही दहेज़ प्रथा का निषेध, अंतर-जातीय विवाह का समर्थन, नारी-जागरण जैसे विषय को चुनकर पाठक वर्ग को जागृत करने का प्रयास इस युग के कहानीकारों ने किया।

स्वातंत्र्योत्तर कहानियों में गांधी जी के विचारों के आर्थिक पक्ष के अंतर्गत खादी, चरखा, ग्रामीण उद्योगों का विकास, सर्वोदय आदि विषयों पर बहुत अधिक उदाहरण तो नहीं मिलते, किन्तु कुछ कहानियां इन विचारों को अवश्य पोषित करती हैं। गांधीजी ने सदैव ही गांव के विकास पर विशेष बल दिया है। वे चाहते थे कि शहरों के विकास के साथ गांव का भी विकास किया जाए। गांधी जी जिस सपनों के भारत की बात करते हैं, वह गांवों में ही बसता है, "मेरा विश्वास है और मैंने इस बात को असंख्य बार दुहराया है कि भारत अपने चंद शहरों में नहीं, बल्कि सात लाख गांवों में बसा हुआ है। लेकिन हम शहरवासियों का ख्याल है कि भारत शहरों में ही है और गांवों का निर्माण शहरों की जरूरतें पूरी करने के लिए हुआ है। हमने कभी यह सोचने की तकलीफ ही नहीं उठाई कि उन गरीबों को पेट भरने जितना अन्न और शरीर ढकने जितना कपड़ा मिलता है या नहीं, और धूप तथा वर्षा से बचने के लिए उनके सिर पर छप्पर है या नहीं।"[५]

स्वातंत्र्योत्तर कहानिकारों ने गांवों की ओर भी लोगों का ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया है। शमशेर सिंह नरुला की कहानी में गांधीजी की गांव संबंधी विचारों को भलीभांति प्रस्तुत किया गया है। "भारत में 7 लाख ग्राम है, यदि 7 लाख युवक अपने जीवन को उनके उत्थान और पुनर्निर्माण के लिए अर्पण कर दें तो दस- पंद्रह वर्ष में ही इस अभागे देश की काया पलटी जा सकती है।"[६] इसी प्रकार ख्वाजा अहमद अब्बास की 'गेहूं और गुलाब' कहानी गांव का विकास कैसे किया जाए, फणीश्वर नाथ रेणु की कहानी 'सिर पंचमी का शगुन' में गांव के विकास में जिस नवीन चेतना का प्रयोग किया जा रहा है, साथ ही लोग जिससे प्रभावित हो रहे हैं, उसे चित्रित किया गया है। रेणु की 'उच्चाटन' कहानी में गांव को लेकर गांधी जी के विचारों की पुनर्व्याख्या की गई है। 'ठेस' कहानी में ग्रामीण उद्योगों के विषय में भी चर्चा की गई है।

खादी और चरखा ने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है, जहां यह आत्म-निर्भरता की प्रतीक है, वहीं ये ग्रामीण कुटीर उद्योगों का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानियों में भी खादी और चरखें को स्थान दिया गया है। ख्वाजा अहमद अब्बास की कहानी 'भारत माता के पांच रूप', जिसमें खादी के प्रति मोह को प्रस्तुत किया गया है। चरखे को स्वावलंबन के रुप में महेंद्र कुमार मुकुल की कहानी 'बलिदान' और 'नारी वेश्या नहीं देवी है' में चित्रित किया गया है। स्वरूप बख्शी की कहानी 'ठंडी मशीन' में खादी का समर्थन मिलता है। रामदरश मिश्र की कहानी 'सड़क' में कहानीकार का खादी प्रेम दिखाया गया है, उनकी 'मुक्ति' कहानी में खादी आर्थिक आत्मनिर्भरता का आधार माना गया है। स्वातंत्र्योत्तर कहानियों में खादी और चरखा को समाज में राष्ट्रीय-जागरण और आर्थिक स्वावलंबन के लिए प्रयुक्त किया गया। वास्तव में खादी और चरखे जैसे कुटीर उद्योग का प्रयोग कर हम राष्ट्र के आर्थिक विकास में योगदान दे सकते हैं। गांधी जी द्वारा बताए गए आर्थिक पक्षों में सर्वोदय, वर्ग-सहभागिता, गौरक्षा आदि विषयों को स्वातंत्र्योत्तर कहानियों में स्थान मिला है।

स्वातंत्र्योत्तर कहानियों में गांधीजी के सैद्धांतिक पक्ष को भी यथेष्ट स्थान दिया गया है,जैसे- सत्य अहिंसा, ब्रम्हचर्य, अपरिग्रह आदि। सत्य के विषय

में गांधीजी का मत है कि "सत्य अर्थात परमेश्वर- यह सत्य का पर अथवा उच्च अर्थ है। अपर अथवा असाधारण अर्थ में सत्य के मानी हैं सत्य आग्रह, सत्य विचार, सत्य वाणी सत्य कर्म।"[७] इसी सत्य की प्रतिष्ठा कहानीकार स्वरुप कुमारी बख्शी ने 'कौड़ियों का नाच' कहानी में करते हैं। इस कहानी के पात्र नंद कुमार द्वारा सत्य को प्रतिपादित किया गया है, जब नायक असत मार्ग पर चलता है तो उसकी स्वर्गवासी मां सपने में आकर उसे सही मार्ग प्रशस्त करती है- "तू इसको अपनी जीत समझता है रे ! बेईमानी, फरेब, जालबट्टा, धोखाधड़ी से जीत की बाजी तेरी सबसे बड़ी हार है।..... अरे सत्य का सहारा पकड़ लो, प्रकाश के पथ पर चलो.....।"८ इसी प्रकार वासुदेव आठले ने 'मानवता की भेंट' कहानी में गांधीवादी विचारों को पल्लवित किया है, "उसका विश्वास था कि सत्य एक है, केवल उसे देखने वालों के दृष्टिकोण भिन्न हैं, वहां तक पहुंचने के मार्ग भिन्न हैं, यदि वास्तव में सभी शास्त्र सत्य की खोज में लगे हुए हैं तो एक ना एक दिन वे सही मार्ग पर आ जाएंगे।"[९]

आनंद प्रकाश जैन की 'सेल्यूकस की बेटी', 'देशद्रोही', अमृत राय की 'प्राकृत', बलदेव उपाध्याय की 'प्रेम की साधना' आदि उल्लेखनीय हैं। वर्तमान युगीन कहानियों में भी 'सत्य' के दर्शन होते हैं। चैतन्य भट्ट की कहानी 'रंग में भंग' में सत्य की महिमा को प्रस्तुत किया गया है। "सत्य ही परम धर्म है। आशा है आप उसका पालन अवश्य करेंगे। मेरी याचना केवल इतनी है कि आप इन निरीह पशुओं को मुक्त कर दीजिए।"[१०]

'अहिंसा' मूल्य भी 'सत्य' के बराबर की व्यापक है। अहिंसा की सिद्धि हुए बिना सत्य की सिद्धि होना अशक्य है। इसलिए सत्य को भिन्न रीति से देखें तो वह अहिंसा की पराकाष्ठा ही है। पूर्ण सत्य और पूर्ण अहिंसा में भेद नहीं है, फिर भी समझाने के सुभीते के लिए, सत्य, साध्य और अहिंसा साधन मान ली गई है।"[११] गांधीजी ने अहिंसा के जिस उपर्युक्त महत्व को प्रतिपादित किया है, वही महत्व स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानीकारों ने भी स्थापित किया है। आनंद प्रकाश जैन की कहानी 'देवताओं की चिता' में अहिंसा का महत्व व्याख्यायित किया गया है, "सब प्रकार की हिंसा का त्याग करके ही मनुष्य मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। मानव को मानव पर हिंसा का प्रयोग करने का अधिकार नहीं है। इस कारण दया का पात्र निश्चित करते समय यह जानने की आवश्यकता है कि उसका अपराध क्या है। हिंसा ना हो यही सर्वप्रथम कर्तव्य है।"[१२] बलदेव उपाध्याय की कहानी 'अधिकार का रहस्य' में अहिंसा के महत्व को प्रतिपादित किया गया है। स्वतन्त्रता के बाद की कई कहानियों में अहिंसा के इस तत्व को प्रस्तुत किया गया है। पारसनाथ सरस्वती की कहानी 'अहिंसा की विजय' भी इसी प्रकार की रचना है, जिसमें अहिंसा के मूल्य तथा उसकी विजय को अभिव्यक्त किया गया है।

समग्रतः गांधीवादी मूल्यों एवं विचारों के आधार पर स्वातंत्र्योत्तर युगीन कहानियों के विभिन्न पक्षों पर विवेचन-विश्लेषण के पश्चात यह स्पष्ट होता है कि स्वातंत्र्योत्तर युगीन अनेक कहानियों में गांधीवादी मूल्यों की अभिव्यक्ति की गई है। गांधीवाद के तमाम सिद्धांतों को विभिन्न साहित्यकारों ने अपनी विविध रचनाओं में स्थान दिया है। अनेक कहानीकारों ने अपनी कहानियों में गांधीवादी मूल्यों को विशेष स्थान तो दिया ही है, साथ ही 'गांधीवाद' की कसौटी पर भी परखने की कोशिश की है। अंततः यह कहा जा सकता है कि वर्तमान संदर्भ एवं युग में भी गांधीवादी विचारों की प्रासंगिकता स्वयंसिद्ध है।

**संदर्भ एवं सहायक ग्रंथ-**

१- विशिष्ट साहित्यिक एवं प्रतियोगी निबंध डॉक्टर भगवान दास चरण भारद्वाज पृष्ठ 181

२- चतुरंग- श्री अमृत राय पृष्ठ-17
३- एक कथानक:एक व्यथा- श्री महेंद्र कुमार मुकुल- पृ० 75-76
४- मेरी प्रिय कहानियां- भगवती चरण वर्मा पृ० 78
५- गांधी जी ने कहा था- गांधीजी पृ० 58-59
६- आधी रात का सूरज- शमशेर सिंह नरुला, पृ० 25
७- गांधी विचार दोहन- किशोर लाल मशरुवाला – पृ० 15
८- स्वरूप कुमारी बख्शी ग्रंथावली- पृ०-33
९- गल्प तालिका- संपादक दुर्गादत्त मेनन, पृष्ठ 246
१०- सरिता- नवंबर 1975,पृ०-67
११- गांधी विचार दोहन- किशोर लाल मशरुवाला, पृ०16
१२- देवताओं की चिता- आनंद प्रकाश जैन